but A, S om. च before चि; C निषटकेक॰, changed by me to चषडक॰.—
17. A, S ग्रेमहोप्र॰.—The title in D is जलाताध्याय:—The number in C is 93, in B, D 97.

## CHAPTER XCVIII.

V. L. C. L. Street V. start MAN TO SEE U. - A PUR DUM FOR VOIL SONT TO

1. N यम for वसु.—2. C notices a v. r. श्रार for श्रात.—After vs. 3 N has द्ति तारकापाकाध्यायः—In A, S follow 13 vss., taken from the 7th Chapter of Varáha-Mihira's Yátrá; at the end A, S have द्ति नच वनेटमं, the same title as in the Yátrá. There A, S close the Chapter, so that vs. 4 of the others and of our text, is with them vs. 1 of a following Chapter.—5. A, S इन्द्र for अक्र.—D (अ) हिवेश:—7. A, S, B, D अभिचार for अभिधात.—A वैताल.—8. D, N पूर्वा.—A, S उद्देह, N उद (sic).— A, S, N om. बंध.—9. All but C अश्विन for आश्विन.—A, S, D शिल्पाषि.— A, S अभिजिद्धव for प्रदिष्टानि, C remarks केचिद्भिजितं चाष्यवेच्हंति, but from this it does not follow that he knew a r., in which अभिजित was found.—10. All but A, S वर्गा ह्य.—11 and 12 are transposed in A, S. - 12. All but A, S च for वा.-D, N यदि श्रस्तारा for श्रुभ॰.-13. C गमनानाख.-A, S, N निराश्नानां.-C निशा श्निकुजार्कतिथा, D निशा कुजदिने उथ तिथा, N कुजार्कतिथा, C notices a v. r., apparently च नवसे र्जिन चापि षष्ठाां.—After 13 N has: चीरे तु मामं चपयेद्दिनेशः श्रनेसरः सप्त कुजस्थारो। याचार्यग्रकेन्द्ब्धाः क्रमेण एकाद्यीकाद्य सप्त पंच॥.—14. All but C, D संमतेन.—C, D स्ततके वा.—A संमतेन वहस्य मोचे ऋतुदीचणासु। विवाहका से स्तस्त्रतके च -D कार्थ for श्रसं.-15. is om. in C.-A, N अवण, D अवण:-D हितानि for ग्रामानि -16. D, N साविश-All but D तिथ .- D मेखलाद्याः, the others but C मेखलाद्यान्.-17. is wanting in C, D, N at this place, and occurs as vs. 8 of Ch. 99.—A, S पापे लिप हा-यगतिविं समें for पापैविं होने ग्राभराशिस में -A, S, D, N अमरेच्य for विद्यांच्य.—The title of this Ch. in A, S, N is नचवकमंगणाः, in C नचनगणाः कर्माध्यायः—The number in C is 94, in B 98, in D 98 (in figures) and 99 (in words). the ordiners went, our roxt follows THE SOUTH DUTTEN ALL STREET TO THE TOTAL ALL OF

## CHAPTER XCIX.

A, S अथ तिथिकरणगुणाः—N begins with: शिवभुजगिमविमविष्टवसुत-लिविश्वविरंचिपंकप्रभवाः। इन्द्राग्नीन्द्रनिशाचरवरुणार्थमथानयसाहि॥ रद्राजाहि-बुधा पूषा दस्तांतकाग्निधातारः। इन्द्रदितिगुरुहिर्गिवलपुर्गिलाचाचा चणा रावा॥ मुहर्त्तसंख्या॥ Then vs. 1.—2. D, N ॰ मावास्थाया.—A, S ज्ञेथाः for संज्ञाः—D, N सहसा—क्रिया—कार्था.—C, S पूर्णास.—3. C नचवैत्त॰.—After